नई तालीम की रूपरेखा

अखिल भारतीय शिक्षा परिषद् द्वारा गठित डॉ. जाकिर हुसैन समिति की रिपोर्ट से अंश

1937 में वर्धा में आयोजित 'अखिल भारतीय शिक्षा परिषद्' की बैठक में गांधीजी के नई तालीम के प्रस्ताव एवं विचार पर खुली चर्चा हुई। इस बैठक में सब बच्चों की सात साल की मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा, मातृभाषा में शिक्षा, उत्पादक दस्तकारी की शिक्षा आदि के विचार बहस के लिए प्रस्तावित किए गए। बहस के बाद सात साल की मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा के पाठ्यक्रम विकास के लिए डॉ. जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया।

इस समिति ने सात साल की अनिवार्य शिक्षा का एक खाका प्रस्तुत किया। रिपोर्ट का एक अंश यहां दिया जा रहा है। रिपोर्ट पढ़ने से जाहिर होता है कि नई तालीम की जिन आधारों पर आलोचना की जाती है और आमतौर पर बुनियादी शिक्षा को दस्तकारी की शिक्षा तक ही सीमित मान लिया जाता है; जाकिर हुसैन समिति की रिपोर्ट इसके कहीं ज्यादा व्यापक आधार उपलब्ध कराती है।

1. बुनियादी सिद्धान्त

शिक्षा का मौजूदा तरीका

इस समय हिन्दुस्तान में जो शिक्षा का तरीका चला हुआ है, उसे करीब-करीब सभी हिन्दुस्तानी एक आवाज से बुरा कहते हैं। पिछले जमाने में यह शिक्षा हमारे राष्ट्रीय जीवन की जरूरी और अटल मांगों को पूरा नहीं कर सकी है और न उसकी ताकतों और भावनाओं को संगठित करके ठीक रास्ते पर लगा सकी है। आज जबकि हमारे राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में बड़ी तेजी के साथ और दूर तक असर पैदा करने वाले हेरफेर हो रहे हैं और नागरिकों के सामने नए-नए सवाल आ रहे हैं, यह शिक्षा जीवन की असली धारा से अलग रहकर अपने पुराने ढर्रे पर लड़खड़ाती चली जा रही है और अपने को बदले हुए जमाने के अनुकूल नहीं बना पा रही है। इस पर न तो देश की मौजूदा सच्ची हालत का कोई असर होता है, न इसके सामने कोई ऐसा ऊंचा आदर्श ही है, जो देश में जान डाल देने और कुछ नई चीज पैदा करने की ताकत रखता हो। यह न तो लोगों को समाज के उपयोगी और उत्पादक अंग बनाती है, न अपने पैरों पर खुद खड़ा होना और न समाज के काम में पूरी तरह हिस्सा लेना सिखलाती है। मौजूदा समाज लूट-खसोट, छीना-झपटी और मारपीट की नींव पर खड़ा है। परन्तु समाज तो ऐसा होना चाहिए जिसमें सब लोग हिलमिल कर एक-दूसरे के साथ काम करते हुए रह सकें। इस नए समाज को पैदा करने में मदद पहुंचाना शिक्षा का काम है परन्तु मौजूदा शिक्षा के सामने इसकी कल्पना तक नहीं है। इसलिए आजकल चारों तरफ से यह पुकार है कि शिक्षा के इस मौजूदा तरीके को बदलकर एक ऐसा नया तरीका चलाया जाए कि जिसमें नई रचना करने की ताकत हो और जिसकी नींव मनुष्यों की हमदर्दी और भलाई पर रखी गई हो, जो राष्ट्रीय जीवन के आदर्शों और जरूरतों से अधिक घुली-मिली हो और जो मौजूदा जरूरी मांगों को अधिक अच्छी तरह पूरा कर सकती हो।



हिन्दुस्तान के बच्चों के लिए शिक्षा की जो भी योजना तैयार की जाएगी, वह कुछ बातों में पश्चिम की शिक्षा के तरीके से जड़मूल से ही अलग होगी, क्योंकि हमारी जिन्दगी का रास्ता ही दूसरा है। हर तरह की आजादी

को प्राप्त करने के लिए हमारे राष्ट्र ने अहिंसा को अपनाया है और शान्तिमय उपायों को ही साधन माना है। इसलिए हमारे बच्चों को यह सिखाने की जरूरत है कि अहिंसा का तरीका हिंसा से अच्छा है।

महात्मा गांधी का नेतृत्व

अन्य मामलों की तरह इस मामले में भी दूरदर्शी गांधीजी इस घड़ी अगुआ बने हैं और वे दिलोजान से इस कोशिश में लगे हैं कि शिक्षा का कोई ऐसा तरीका निकले, जो हिन्दुस्तान के लोगों की प्रकृति के अनुकूल हो और साथ ही साथ कम से कम वक्त में सारी जनता में शिक्षा के प्रसार के सवाल को अमली तौर पर हल कर सके। उनकी योजना का बुनियादी खयाल, जैसा कि उन्होंने 'हरिजन' में लिखे अपने लेखों में और वर्धा शिक्षा सम्मेलन में जाहिर किया था, यह है कि वही शिक्षा पक्की हो सकती है, जो किसी दस्तकारी या पैदा करने वाले किसी काम के जरिए दी जाए और उस दस्तकारी के ही इर्द-गिर्द और सब तालीम दी जा सके। अगर यह दस्तकारी ठीक तरह से सिखाई जाए, तो मदरसे से शिक्षकों का कुछ खर्च भी उससे निकलना चाहिए। महात्माजी का कहना है कि इसके जरिए सरकार फौरन ही मुफ्त और अनिवार्य बुनियादी तालीम जारी कर सकती है। अगर ऐसा न किया गया तो आज देश की जो राजनैतिक और आर्थिक हालत है, उसमें शिक्षा का खर्च वह चला नहीं सकती।

स्कूलों में हाथ का काम

आजकल के करीब-करीब सभी शिक्षाशास्त्री इस बात की सिफारिश करते हैं कि बच्चों की शिक्षा किसी उपयोगी दस्तकारी के जरिए होनी चाहिए। यह बच्चों की सर्वांगीण और समग्र तालीम का सबसे अच्छा तरीका समझा जाता है।

बच्चे आदत से चंचल होते हैं। वे स्कूलों में बैठकर किताबें पढ़ते रहना पसन्द नहीं करते और जबरदस्ती करने से हमेशा इसके खिलाफ बगावत करते हैं। इसलिए बालकों के मनोविज्ञान की दृष्टि से भी यह तरीका अच्छा है। क्योंकि यह लड़कों को महज किताबी पढ़ाई के बोझ से बचाता है। यह तरीका मनुष्य के दिमागी और अमली दोनों अनुभवों की समतोल बनाए रखता है और इसके जरिए हाथ और दिमाग दोनों को साथ-साथ तालीम मिलती है। इससे बच्चों को जो शिक्षा मिलती है, वह इतनी छिछली नहीं होती कि वे केवल छपे हुए पन्नों को पढ़ भर लें। बल्कि उनकी योग्यता इतनी हो जाती है कि जिससे वे अपने हाथ और दिमाग दोनों का पूरा उपयोग करके कोई मुफीद काम कर सकें। इसे हम इंसान के पूरे व्यक्तित्व की शिक्षा कह सकते हैं।

> **दस्तकारी के अन्दर मनुष्य की शिक्षा को लाभ पहुंचाने की जो शक्तियां भरी पड़ी हैं, उन सबका पूरा-पूरा उपयोग हो। इसलिए यह जरूरी है कि दस्तकारी का काम स्कूल की पढ़ाई का एक अंग ही न हो, बल्कि दूसरे सब विषयों को सिखाने का यह एक माध्यम हो और दूसरे सब विषयों की पढ़ाई इसके जरिए आप से आप हो सके।**

समाज की दृष्टि से इसे देखें, तो इस तरह से जब देश के सब बच्चे मिल-जुलकर कोई मुफीद और अमली काम शिक्षा के रूप में करेंगे, तो आज मेहनत-मजदूरी करने वाला और दिमागी काम करने वालों के बीच में जो जात-पांत की दीवारें खड़ी हैं और जो दोनों को नुकसान पहुंचा रही हैं, वे अपने आप ही धीरे-धीरे हट जाएंगी। हमारे देश में मेहनत को इज्जत की निगाह से देखने और मानवीय एकता के भाव सहज और सही तौर पर कायम करने के लिए यही एक तरीका है और इससे आम जनता को जो नैतिक और आध्यात्मिक लाभ होगा उसका असर बहुत दूर तक पड़ेगा।

आर्थिक पहलू से देखा जाए तो इस योजना को होशियारी और खूबी के साथ अमल में लाने पर यह हमारे कारीगरों की उत्पादक शक्ति को बढ़ाएगी और उन्हें अपने फुरसत के समय से फायदा उठाना सिखलाएगी।

और सब छोड़कर केवल शिक्षा की दृष्टि से देखा जाए, तो किसी खास दस्तकारी को शिक्षा का आधार बनाने से बच्चों को जानकारी आज से कहीं ज्यादा ठोस और असली हो सकेगी। इस तरह बच्चे जो कुछ सीखेंगे, उसका जिन्दगी के साथ लगाव होगा और उसके सब पहलू एक-दूसरे के साथ गुंथे होंगे।

दो जरूरी शर्तें

इन सबके लाभ उठाने के लिए जरूरी है कि दो बातों का पूरा खयाल रखा जाए। एक, जो भी दस्तकारी चुनी जाए, वह ऐसी हो कि उसके जरिए शिक्षा देने की कुछ गुंजाइश हो। आदमी के जरूरी कामों और दिलचस्पियों से सहज लगाव रखने वाली सभी बातें इसमें होनी चाहिएं और यह भी जरूरी है कि ये बातें शिक्षा के पूरे पाठ्यक्रम में फैलाई जा सकें। रिपोर्ट में आगे चलकर जहां हमने दस्तकारी चुनने की सिफारिश की है, वहां इस बात का खासतौर पर खयाल रखा है और जिन लोगों का इस योजना से किसी भी तरह का सरोकार हो, उन्हें चाहिए कि इस जरूरी बात का पूरा ध्यान रखें।

शिक्षा की इस योजना का असल ध्येय यह कभी नहीं है कि महज ऐसे कारीगर पैदा किए जाएं जो मशीन की तरह हाथ का काम कर सकते हों। इसका ध्येय तो यह है कि दस्तकारी के अन्दर मनुष्य की शिक्षा को लाभ पहुंचाने की जो शक्तियां भरी पड़ी हैं, उन सबका पूरा-पूरा उपयोग हो। इसलिए यह

जरूरी है कि दस्तकारी का काम स्कूल की पढ़ाई का एक अंग ही न हो, बल्कि दूसरे सब विषयों को सिखाने का यह एक माध्यम हो और दूसरे सब विषयों की पढ़ाई इसके जरिए आप से आप हो सके।

मिल-जुलकर काम करने का सिद्धान्त, काम करने से पहले काम का पूरा नक्शा तैयार कर लेने की आदत, काम ठीक और सच्चा हो, लड़के अपने मन से काम के तरीके निकाल सकें और हर बच्चा अपने काम के लिए जिम्मेवार हो, इन बातों पर शिक्षा में पूरा जोर देना चाहिए। यही मतलब महात्माजी का है जब वे कहते हैं, ''मैं मानता हूं कि इस पद्धति से मन और आत्मा का ऊंचे से ऊंचा विकास किया जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि जो उद्योग-धंधे आज महज मशीन की तरह सिखाए जाते हैं, वैज्ञानिक ढंग से सिखाए जाएं। यानी विद्यार्थी हर क्रिया के बारे में यह भी जान ले कि वह क्यों और किसलिए की जाती है।'' पर वे सीखें अपने तजुरबे से और अपनी आंखों देखकर, समझकर।

अगर सिर्फ इतना ही हुआ की पढ़ाई में सिर्फ हाथ का एक काम कताई-बुनाई या बढ़ईगिरी-बढ़ा दिया गया और दूसरे सब विषय उसी पुराने ढर्रे से सिखलाए जाते रहे, तो विद्यार्थियों में बगैर सोचे-समझे ज्ञान को निगलने की आदत कायम रह जाएगी और उनका ज्ञान बिलकुल बिखरा हुआ होगा जिसके टुकड़ों का एक-दूसरे के साथ कोई लगाव नहीं होगा और इस योजना की असली मंशा और सार ही जाता रहेगा।

पढ़ाई में सिर्फ हाथ का एक काम कताई-बुनाई या बढ़ईगिरी-बढ़ा दिया गया और दूसरे सब विषय उसी पुराने ढर्रे से सिखलाए जाते रहे, तो विद्यार्थियों में बगैर सोचे-समझे ज्ञान को निगलने की आदत कायम रह जाएगी और उनका ज्ञान बिलकुल बिखरा हुआ होगा जिसके टुकड़ों का एक-दूसरे के साथ कोई लगाव नहीं होगा और इस योजना की असली मंशा और सार ही जाता रहेगा।

योजना की तह में नागरिकता का आदर्श

हम चाहते हैं कि जो शिक्षक और शिक्षाशास्त्री शिक्षा की इस नई योजना को अमल में लाने का साहस करें, वे इसकी तह में नागरिकता का जो आदर्श है, उसे अच्छी तरह समझ लें। यह होने वाली बात है कि नए हिन्दुस्तान के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में लोकतंत्र का रंग दिन पर दिन बढ़ता जाएगा। इसलिए आने वाली पीढ़ी के लिए यह जरूरी है कि अपने मसलों को, अपने हक को और अपनी जिम्मेदारियों को समझने का मौका मिले। इसके लिए आज एक ऐसी बिलकुल नई शिक्षा-पद्धति की जरूरत है, जिससे लोगों को कम से कम इतनी तालीम मिल जाए कि वे नागरिकों के अधिकार और कर्तव्यों को समझकर काम में ला सकें। फिर, आजकल हर समझदार आदमी को अपने समाज का कामकाजी अंग होना चाहिए ताकि जिस संगठित सभ्य समाज में वह रहता है, उसके ऋण को किसी न किसी तरह का मुफीद काम करके अदा कर सके। जो शिक्षा केवल दूसरे के ऊपर बोझ होने वाले निकम्मे आदमी पैदा करती हो (चाहे वे अमीर हों या गरीब) वह हर तरह से बुरी है। ऐसी शिक्षा केवल समाज की काम करने की और पैदा करने की ताकत को ही नुकसान नहीं पहुंचाती, बल्कि लोगों में एक भयंकर अनैतिक मनोवृत्ति पैदा करती है। यह योजना इसलिए बनाई गई है कि देश में ऐसे काम करने वाले पैदा हों, जो हर मुफीद काम को, मेहनत-मजदूरी के काम को, चाहे वह मैला उठाने का ही काम हो, इज्जत के काबिल समझें और जो अपने पैरों पर खड़े होना चाहते हों, खड़े हो सकें।

जब स्कूल और समाज के काम में इतना गहरा संबंध होगा, तो बच्चे स्कूल में सीखी बातों को बाहरी दुनिया में आकर भी बरत सकेंगे। इस तरह हम यहां जो नई योजना पेश कर रहे हैं, वह मुल्क के होने वाले नागरिकों को अपनी कद्र और इज्जत करना, अपने आपको सुधारना, समाज की सेवा करना और मिल-जुलकर काम करना सिखलाएगी।

मतलब यह है कि यह योजना एक ऐसे समाज की कल्पना करती है, जिसकी नींव सहयोग पर होगी और जिसमें पढ़ने वालों को लड़कपन से ही जबकि उन पर हर चीज का गहरा असर पड़ता है, समाज सेवा की धुन लग जाएगी। यहां तक कि स्कूलों में शिक्षा पाते हुए भी यह समझने लगेंगे कि राष्ट्रीय शिक्षा के इस महान प्रयोग में वे खुद भी हिस्सा बंटा रहे हैं।

अपना खर्च आप निकालना

इस योजना के स्वावलम्बी पहलू पर भी कुछ कहना जरूरी मालूम होता है, क्योंकि इस बारे में बहुत गलतफहमी फैली हुई है। हम यहां साफ-साफ कह देना चाहते हैं कि बुनियादी तालीम की इस योजना का खाका वर्धा शिक्षा परिषद् में तैयार हुआ था और जो योजना यहां विस्तार से बताई जा रही है, उसे हम हर हालत में अच्छी समझते हैं। अगर यह अपना खर्च कुछ भी न निकाल सके, तो भी शिक्षा की सही पद्धति समझकर और राष्ट्र-निर्माण के लिए एक जरूरी चीज समझकर अपनाई जानी चाहिए। मगर खुशी की बात है कि यह अच्छी तालीम अपने को चलाने का बहुत कुछ खर्च भी निकाल लेगी। हम यहां यह साबित करने की आशा रखते हैं कि वर्धा शिक्षा परिषद् ने जो हद बांध दी है, उसके अन्दर इस शिक्षा पद्धति से उसके खर्च का बड़ा हिस्सा निकल आएगा। (इसके लिए कताई-बुनाई का विस्तृत पाठ्यक्रम देखिए) इस पाठ्यक्रम में जो

आंकड़े दिए हैं, उनसे मालूम होगा कि जिस स्कूल में कताई और बुनाई की बुनियादी दस्तकारी होगी, उसमें उसकी आमदनी से स्कूल के चालू खर्च का कितना हिस्सा निकल सकता है ?

इस दस्तकारी की आमदनी और खर्च का हिसाब लगाने में हमें कुछ मुश्किल नहीं हुई, क्योंकि यह काम पिछले सत्रह वर्षों से महात्मा गांधीजी की देखरेख में काफी अच्छी तरह से हो रहा है। मजदूरी का हिसाब अखिल भारत चरखा संघ की महाराष्ट्र शाखा की दरों से लगाया है। दूसरी दस्तकारियों में बाजार भाव से हिसाब लगाया जा सकता है। इस सिलसिले में महात्माजी ने साफ-साफ कहा है कि सरकार को इसका जिम्मा लेना चाहिए कि वह स्कूलों में पढ़ने वाले अपने भावी नागरिकों की बनाई हुई चीजों को ऊपर बताए हुए भाव पर खरीद ले। 'हर स्कूल अपना खर्च आप निकाल सकता है। शर्त यह है कि सरकार स्कूल में बनी चीजों को खरीद ले।' हम इस राय का पूरे दिल से समर्थन करते हैं।

इस आमदनी से जो अधिक फायदा होगा, उसे छोड़कर यों भी हमारा खयाल है कि सिखाने वालों और सीखने वालों के काम की अच्छाई और खूबी को जांचने और नापने का भी कोई पैमाना होना चाहिए। अगर यह न हुआ तो डर है कि काम ढीला पड़ जाएगा और उससे कोई तालीमी फायदा नहीं होगा। जिन-जिन शिक्षकों और शिक्षाशास्त्रियों ने अपने स्कूलों में 'हाथ के काम' या 'असली काम' का प्रयोग किया है, उन्हें इस बात का अच्छा अनुभव है।

हम यहां एक चेतावनी दे देना निहायत जरूरी समझते हैं। इस योजना के चलाने में एक बहुत बड़ा डर यह भी है कि ऐसा न हो कि आमदनी पर इतना अधिक जोर दिया जाए कि हम जो शिक्षा और संस्कृति संबंधी फायदा उठाना चाहते हैं, वह बिलकुल ही जाता रहे। ऐसा न हो कि सिखाने का सारा समय और ध्यान लड़कों से ज्यादा-से-ज्यादा काम निकालने में लग जाए और इस शिक्षा से जो बौद्धिक सामाजिक और नैतिक फायदे उठाए जा सकते हैं उनको भुला दिया जाए। इसलिए शिक्षकों की तैयार करने में निरीक्षकों के काम की देखरेख में, मतलब शिक्षा के सभी कामों में, इस बात का पूरा खयाल रखना चाहिए।

2. ध्येय या मकसद

जो थोड़ा-सा वक्त हमें मिला था, उसमें यह संभव न था कि हम पूरे सात साल का ऐसा ब्योरेवार कार्यक्रम बना लेते जो उद्योग की तालीम को दिमागी तालीम से मिलाता। फिर भी हमने अलग-अलग शीर्षकों में नए स्कूलों के ध्येय को लिखने की कोशिश की है। हमारा खयाल है कि आगे चलकर हर प्रान्त के तालीम-बोर्ड में एक ऐसा सदस्य रखना पड़ेगा जो पाठ्यक्रम बनाने में विशेषज्ञ हो। उसके जिम्मे यह काम रहेगा कि वह पूरे सात वर्ष के लिए ऐसा ब्योरेवार पाठ्यक्रम बनाए, जिसमें दिमागी और दस्तकारी की पढ़ाई का ठीक ठीक मेल हो। नए स्कूलों में अच्छे विद्वानों की देखरेख में काम करके शिक्षक लोग जो अनुभव प्राप्त करेंगे वे इस काम के लिए बुनियादी चीज बन सकेंगे। फिर भी हमने मोटे तौर पर एक सिलसिलेवार पाठ्यक्रम बनाने की कोशिश की है, जो इस रिपोर्ट का दूसरा हिस्सा है।

नए हिन्दुस्तान के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में लोकतंत्र का रंग दिन पर दिन बढ़ता जाएगा। इसलिए आने वाली पीढ़ी के लिए यह जरूरी है कि अपने मसलों को, अपने हक को और अपनी जिम्मेदारियों को समझने का मौका मिले। इसके लिए आज एक ऐसी बिलकुल नई शिक्षा-पद्धति की जरूरत है, जिससे लोगों को कम से कम इतनी तालीम मिल जाए कि वे नागरिकों के अधिकार और कर्तव्यों को समझकर काम में ला सकें।

बुनियादी तालीम के सात साल के पाठ्यक्रम की एक रूपरेखा

(1) बुनियादी दस्तकारी

जो भी दस्तकारी चुनी जाए उसमें विद्यार्थियों को इतनी कुशलता आ जानी चाहिए कि पूरी पढ़ाई खत्म करने के बाद, अगर जरूरत हो तो वे उसे अपना पेशा बना सकें।

स्कूल में नीचे लिखी दस्तकारियों में से कोई एक दस्तकारी सुविधा के अनुसार चुनी जा सकती है-

(i) कताई और बुनाई
(ii) बढ़ईगिरी
(iii) खेती
(iv) फल और साग-सब्जी पैदा करना
(v) चमड़े का काम
(vi) दूसरी कोई भी दस्तकारी जो भौगोलिक और स्थानीय हालातों के अनुकूल हो और ऐसी हो कि उसके जरिए शिक्षा देने की काफी गुंजाइश हो।

जहां कताई-बुनाई या खेती को छोड़कर कोई दूसरी बुनियादी दस्तकारी चुनी जाएगी, वहां भी विद्यार्थियों से यह उम्मीद की जाएगी कि उन्हें रूई धुनने, तकली पर सूत कातने और अपने यहां की खेती-बाड़ी के काम से संबंध रखने वाली बातों को मामूली व्यावहारिक जानकारी हो।

(2) मातृभाषा

मातृभाषा की समुचित शिक्षा ही सारी शिक्षा की नींव है। जब तक आदमी अपनी मातृभाषा अच्छी तरह बोल नहीं सकता और न सही और साफ

लिख सकता है, तब तक उसके विचारों में तौल और स्पष्टता नहीं आ सकती। इसके अलावा मातृभाषा एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा बच्चों को अपने देश के विचारों, भावनाओं और आकांक्षाओं की बहुत बड़ी विरासत हासिल होती है। इसलिए हम मातृभाषा को बालक की सामाजिक तालीम का एक कीमती साधन बना सकते हैं और उसके जरिए बच्चों में सदाचार की सही भावना पैदा कर सकते हैं। दूसरे, मातृभाषा वह स्वाभाविक साधन है, जिसके द्वारा बच्चा सुन्दर चीजों की सराहना को जाहिर करता है और अगर इसकी शिक्षा के लिए ठीक-ठीक उपायों का सहारा लिया जाए, तो बच्चा उस भाषा के साहित्य का आनन्द भी ले सकता है और उस आनन्द को अपनी रचनाओं द्वारा प्रकट करने की योग्यता भी पा सकता है। सात साल की पढ़ाई के अन्त में नीचे लिखे ध्येय हासिल हो जाने चाहिएं-

बालक को इस योग्य हो जाना चाहिए कि वह अपने आसपास की चीजों और घटनाओं के बारे में स्वाभाविक रूप से, खुलकर और विश्वास के साथ बातचीत कर सके और उसकी यह योग्यता धीरे-धीरे इतनी बढ़ जानी चाहिए कि-

(i) वह रात-दिन के काम की किसी भी बात पर साफ-साफ और ठीक-ठाक बोल सके।

(ii) छपे हुए और लिखे हुए उन प्रकाशनों को, जो अधिक कठिन न हों, मन ही मन सूझ-बूझ के साथ और जल्दी से पढ़ सके। इस योग्यता को कम से कम इतना तो जरूर बढ़ाना चाहिए कि बच्चे दैनिक पत्रों और मासिक पत्रिकाओं को आसानी से पढ़ और समझ सकें।

(iii) पद्य और गद्य दोनों को जोर से साफ-साफ, मतलब को साफ करते हुए आनन्दपूर्वक पढ़ सके। (विद्यार्थी को इस योग्य होना चाहिए कि वह पढ़ते वक्त आजकल के निर्जीव और थका देने वाले ढर्रे को छोड़ दें।)

(iv) वह किताबों की विषय-सूची, शब्द-कोषों और सन्दर्भ-ग्रंथों का व्यवहार जाने और अपनी आम जानकारी को बढ़ाने और आनन्द लेने के लिए पुस्तकालयों का उपयोग कर सके।

(v) वह ऐसा लिख सके कि उसकी लिखावट आसानी से पढ़ी जाए। उसकी लेखन की गति अच्छी हो और लेखन शुद्ध हो।

(vi) रात-दिन की घटनाओं और बातों को सादी और साफ भाषा में बयान कर सके जैसे, गांव की आमसभा की रिपोर्ट लेना।

(vii) वह घरेलू और कारोबार की चिट्ठी लिख सके।

(viii) बच्चों को प्रतिष्ठित लेखकों की रचनाओं से चुनी हुई चीजें पढ़ाई जाएं, जिससे उन्हें अपने लेखकों से परिचय हो और उनकी रचनाओं से प्रेम हो।

(३) गणित

गणित की शिक्षा का ध्येय यह है कि वह विद्यार्थियों को इस योग्य बना दे कि वे अपने घरेलू धंधे और सामाजिक जीवन के सिलसिले में खड़े होने वाले हिसाब-किताब और नाप-जोख के सवालों को आसानी और जल्दी से हल कर सकें। बालकों को महाजनी बही-खाते की भी थोड़ी जानकारी होनी चाहिए।

हमारा खयाल है कि यह ध्येय नीचे लिखी बातों को ठीक-ठीक जानकारी और अभ्यास होने से प्राप्त हो सकता है।

जोड़, बाकी, गुणा और भाग (सादा और मिश्र), दशमलव, त्रैराशिक, एकिक नियम, ब्याज, पैमाइश का मामूली ज्ञान, अमली रेखागणित और बही-खाते का साधारण ज्ञान हो जाए।

गणित की पढ़ाई सिर्फ कक्षा में अंकों के हेर-फेर तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए। बल्कि बुनियादी दस्तकारी को सीखते समय स्कूल और समाज के जीवन में जो अमली सवाल खड़े होते हैं, उन सवालों के साथ इस शिक्षा का संबंध होना चाहिए। इस सिलसिले में विद्यार्थियों को राशियों की नाप-जोख और माल का ठीक-ठीक ज्ञान पाने का जो अभ्यास होगा, उसी से उनकी बुद्धि के विकास को काफी मौका मिलेगा।

(4) सामाजिक विज्ञान

इसके ध्येय निम्नलिखित हैं-

(i) आमतौर पर मानव-जाति की प्रगति और खासतौर पर हिन्दुस्तान की प्रगति की तरफ दिलचस्पी पैदा करना।

(ii) विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना कि वे अपने समाज और भूगोल की हालत को समझ सकें और उसमें सुधार करने के लिए तैयार हों।

(iii) उनके दिल में देश का प्रेम हो, वे हिन्दुस्तान के पिछले जमाने की इज्जत करें और आने वाले जमाने के बारे में यह विश्वास रखें कि वह एक ऐसे समाज का घर होगा, जिसकी नींव मिल-जुलकर काम करने और मुहब्बत, सच्चाई और न्याय पर रखी जाएगी।

(iv) नागरिकता के हकों और जिम्मेदारियों का खयाल पैदा करना।

(v) विद्यार्थियों में ऐसे व्यक्तिगत और सामाजिक सद्गुण पैदा करना, जिससे वे सच्चे साथी और मददगार पड़ोसी बन सकें।

(vi) दुनिया के सभी धर्म-मजहबों के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

इन ध्येयों को पूरा करने के लिए यह जरूरी होगा कि विद्यार्थियों को इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र और देश-विदेश की मौजूदा हालत

का ज्ञान कराया जाए। साथ ही संसार के विभिन्न धर्मों का आदर के साथ अध्ययन कराकर उन्हें यह समझने का मौका दिया जाए कि सिद्धान्त की बातों में संसार के सब धर्म-मजहब आपस में पूरी तरह एक राय हैं। विद्यार्थियों की अपनी परिस्थिति के अध्ययन से ही सामाजिक विज्ञान के अध्ययन का आरम्भ होना चाहिए और मनुष्य किन-किन तरीकों से अपनी तरह-तरह की जरूरतों को पूरा करता है, उसकी तरफ बच्चों का ध्यान खींचकर उनमें मनुष्य के जीवन और कामों के बारे में अधिक जानने की इच्छा पैदा करनी चाहिए।

1. हिन्दुस्तान के इतिहास की एक सादी रूपरेखा देनी चाहिए और उसके साथ इस देश के जनसाधारण के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास की मुख्य घटनाओं पर जोर दिया जाना चाहिए और यह दिखाना चाहिए कि किस तरह धीरे-धीरे लोगों ने राजनीतिक और सांस्कृतिक एकता की दिशा में प्रगति की है। प्रेम, सत्य और न्याय के भाव, हिल-मिलकर काम करना, राष्ट्रीय एकता, मनुष्य की समानता और भ्रातृत्व आदि इतिहास के इन आदर्शों पर ही जोर दिया जाना चाहिए। इन बातों की शिक्षा छोटे दर्जों में प्रमुख लोगों के जीवन की कहानियां बताकर और ऊपर के दर्जों में समाज के पूरे जीवन और संस्कृति के विकास को दिखाकर देनी चाहिए।

   इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि विद्यार्थियों को पुराने जमाने का इतिहास इस तरह से न पढ़ाया जाए कि उनमें अतीत का अभिमान ऐसा उद्दण्ड देश-प्रेम पैदा करे कि वे अपने को दूसरे सब देशों से अलग और दूसरे सब देशों और जातियों को अपने से छोटा समझने लगें। मानव-जाति का इतिहास इस तरह से पढ़ाना चाहिए कि जिससे जिन वीरों ने मनुष्य को पशुता से मानवता की ओर लाने की कोशिश की है, उनकी शान्तिमय विजय-कहानियों का ही पाठ्यक्रम में प्रधान स्थान हो और मानव-जाति के इतिहास से उदाहरण लेकर बार-बार दिखाना चाहिए कि मानव-जीवन में हिंसा, धोखे, और दंगे से; अहिंसा और उसके साथ रहने वाले गुणों की ही शक्ति अधिक है।

   हिन्दुस्तान में राष्ट्रीय जागरण का इतिहास विद्यार्थियों का इस तरह पढ़ाया जाना चाहिए कि वे अपने देश में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक आजादी के लिए जो लड़ाई चल रही है, उसे समझ सकें और आगे चलकर जब उन्हें मौका पड़े तो वे अपनी जिम्मेदारी को खुशी के साथ उठा सकें ओर इस बदलते जमाने की कठिनाइयों को सह सकें। राष्ट्रीय सप्ताह और राष्ट्रीय त्यौहारों को मनाना हर स्कूल के कार्यक्रम का एक विशेष अंग होना चाहिए।

विद्यार्थियों को पुराने जमाने का इतिहास इस तरह से न पढ़ाया जाए कि उनमें अतीत का अभिमान ऐसा उद्दण्ड देश-प्रेम पैदा करे कि वे अपने को दूसरे सब देशों से अलग और दूसरे सब देशों और जातियों को अपने से छोटा समझने लगें। मानव-जाति का इतिहास इस तरह से पढ़ाना चाहिए कि जिससे जिन वीरों ने मनुष्य को पशुता से मानवता की ओर लाने की कोशिश की है, उनकी शान्तिमय विजय-कहानियों का ही पाठ्यक्रम में प्रधान स्थान हो

2. सर्वसाधारण की सेवा-सुविधा के लिए जितनी व्यवस्थाएं हैं, उनसे विद्यार्थियों का परिचय कराना चाहिए। उन्हें पंचायतों और सहकारी समितियों की कार्य-प्रणाली, सरकारी नौकरों के कर्तव्य, जिला बोर्ड और म्युनिसिपैलिटि के कायदे-कानून बतलाने चाहिएं। उन्हें यह भी जानना चाहिए कि वोट क्या है और किस तरह काम में लाया जाता है। जिन संस्थाओं में लोग चुनकर प्रतिनिधि भेजते हैं, उनसे क्या फायदा है, ये पहले किस तरह बनीं और किस तरह आगे बढ़ीं, इन सब बातों की जानकारी भी बच्चों को देनी चाहिए और इन सब चीजों की तालीम खाली किताबी न हों, बल्कि वास्तविक जीवन की घटनाओं से संबंध रखती हों। स्कूल का काम भी इस तरह चलाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों को 'स्वायत्त-शासन' का कुछ अमली अनुभव मिल जाए। हो सके तो स्कूल का अपना अखबार हो, नहीं तो बच्चे बाहर का कोई अखबार मिल-जुलकर पढ़ते रहें, जिससे उन्हें रोज-रोज की खास-खास घटनाएं मालूम होती रहें।

3. सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम में दुनिया के भूगोल का मामूली ज्ञान और हिन्दुस्तान के भूगोल का और दूसरे देशों के साथ उनके संबंध का पूरा ज्ञान रहना चाहिए, इसमें नीचे लिखी हुई बातें रहनी चाहिए।

(क) भौगोलिक परिस्थिति अपने देश और विदेश के वनस्पति-जीवन, प्राणी-जीवन और मनुष्य जीवन के ऊपर किस तरह प्रभाव डालती है। इसकी कहानियां सुनाकर, तस्वीरें दिखाकर, प्रकृति की चीजों को आंखों से दिखाकर विद्यार्थियों से बातचीत करके इस बात को समझाना चाहिए और इसके उदाहरण उनके चारों तरफ जो प्रकृति की चीजे हैं, उन्हीं द्वारा देने चाहिएं।

(ख) मौसम की हालात को समझना और समझाना। इस बात की तालीम स्कूल के अन्दर नहीं, बल्कि स्कूल के बाहर प्रकृति के वातावरण में ही दी जानी चाहिए। जैसे, सूरज को रोज-रोज दिखाकर यह समझाना चाहिए कि हर मौसम में दोपहर को सूरज की ऊंचाई में क्या फर्क होता है। हवा का रुख बताने वाले किसी मामूली साधन से हवा का रुख मालूम करना, ऋतु-यंत्र देखकर ऋतु का

हेर-फेर समझाना, ताप मापक यंत्र (थर्मामीटर) और वायु भार मापक यंत्र (बैरोमीटर) से हवा की गर्मी और दबाव को मालूम करना और उसके लिखने और बताने के तरीके सिखाना। बारिश वाले और बिना बारिश वाले दिनों का हिसाब और वर्षा का हिसाब रखना, हवा की दिशा का ज्ञान, भिन्न-भिन्न महीनों में दिन और रात की लम्बाई वगैरह का ज्ञान, भ्रमण और अमली कामों द्वारा ही देना चाहिए।

(ग) नक्शा देखना और बनाना, दुनिया की गोलाई का ज्ञान, आसपास की जमीन की ऊंचाई, निचाई और उसकी बनावट का अध्ययन और उसका नक्शा बनाना। भूगोल के चिन्हों को पहचानना, एटलस और उनकी सूची का उपयोग।

(घ) एक जगह से दूसरी जगह जाने-आने और माल लाने ले जाने और खबर पाने और भेजने के जितने तरीके हैं, उनका अध्ययन और उनका उद्योग-धंधे और मनुष्य जीवन का प्रभाव बतलाना।

(च) उद्योग-धंधे का अध्ययन और खेतों एवं कारखानों में जाकर अपने पास-पड़ोस की खेती और उद्योग का हाल मालूम करना, विभिन्न देशों का अपनी आर्थिक आवश्यकताओं को आप पूरी करना और एक-दूसरे पर निर्भर करना भी समझाना चाहिए। यह बताना कि उद्योग भौगोलिक परिस्थिति पर कैसे निर्भर रहते हैं और हिन्दुस्तान के मुख्य उद्योग-धंधों से विद्यार्थियों का परिचय कराना।

(5) साधारण विज्ञान

इसके ध्येय निम्नलिखित हैं-

(i) प्रकृति को बुद्धिपूर्वक देखना और उससे आनन्द लेना सिखलाना।

(ii) चीजों को हमेशा सही तौर पर बारीकी से देखना और अपने अनुभव को प्रयोग से जांचने की आदत डालना।

(iii) आसपास के प्राकृतिक दृश्य में जो परिवर्तन होते रहते हैं उनमें और मनुष्य के काम में जहां-जहां विज्ञान का प्रयोग हुआ है, वहां विज्ञान के जो सिद्धान्त निकल सकते हैं, उन्हें सिखाना।

(iv) बच्चों को बड़े-बड़े वैज्ञानिकों के जीवन की ऐसी घटनाओं को चुनकर बताना जिनसे वे समझ सकें कि उन लोगों को सत्य की खोज में कितनी कठिनाइयां झेलनी पड़ी थीं, जिससे कि वे उन पर श्रद्धा करना सीखें।

साधारण विज्ञान के पाठ्यक्रम में नीचे लिखे हुए भिन्न-भिन्न विज्ञानों का थोड़ा-थोड़ा परिचय कराना चाहिए।

(क) प्रकृति परिचय

(अ) आसपास के पौधों, फसलों, जानवरों और चिड़ियों की पहचान।

(ब) ऋतुओं में जो परिवर्तन होते हैं और उनका वनस्पतियों, जानवरों और चिड़ियों और मनुष्यों की जिन्दगी पर जो असर पड़ता है उसका ज्ञान।

(स) विभिन्न ऋतुओं की फसलों और पैदावार को जानना।

(ख) वनस्पति विज्ञान

(अ) पौधों के अंग और उनका काम।

(ब) पौधों के अंकुरने, बढ़ने और फैलने का ज्ञान।

(स) स्कूल के बाग और आसपास के खेतों में काम कराकर विद्यार्थियों को समझाना कि नमी, ताप और प्रकाश की अलग-अलग हालतों के और अलग-अलग प्रकार के बीजों और खादों के क्या प्रभाव होते हैं।

(ग) पशु-विज्ञान

जीवाणुओं, उड़ने और रेंगनेवाले कीड़ों, चिड़ियों और जानवरों का परिचय और यह जानना कि उसमें से कौन मनुष्य का मित्र है और कौन शत्रु।

(घ) शरीर विज्ञान

मनुष्य का शरीर, उसके अंग-प्रत्यंग और उनका काम।

(अ) शरीर की सफाई, दांत, जीभ, नाखून, आंख, नाक, कान, बाल और कपड़ों की सफाई।

(ब) घर और गांव की सफाई, सड़कों, गड्ढ़ों, और नालियों की सफाई, मैले की सफाई और उसका उपयोग।

(स) स्वच्छ पानी, गांव के कुओं की सफाई।

(द) शुद्ध हवा, हवा को साफ रखने में पेड़ों का काम, ठीक-ठीक सांस लेना।

(य) स्वास्थ्य के लिए अच्छा और बुरा खाना, युक्ताहार अर्थात् ऐसा आहार जिसमें पौष्टिकता की जरूरी सब चीजें शामिल हों।

(र) घायलों और बीमारों की सेवा और मामूली दवा-इलाज।

(ल) संक्रामक (छूतवाले) रोगों के सर्वसाधारण प्रकार। ये किस तरह फैलते हैं और इनसे बचने के उपाय।

(व) स्वास्थ्य-रक्षा के लिए आचरण की शुद्धता

(च) शरीर-चर्चा

खेल, कसरत और कवायद (खास करके देशी खेल और कसरतों का अभ्यास कराया जाए।)

(छ) रसायनशास्त्र

हवा, पानी, तेजाब, क्षर और लवण का रासायनिक ज्ञान।

(ज) ग्रह नक्षत्रों का ज्ञान

ग्रह-नक्षत्रों की मदद से रात को दिशा पहचानना और समय जानना।

(झ) कहानियां

वैज्ञानिकों और नए-नए देश ढूंढ़ने वालों की कहानियां और उन्होंने मानव समाज की भलाई के लिए जो काम किए हैं उनकी कहानियां।

(6) चित्रकला

चित्रकला का निम्नलिखित ध्येय हैं-

(1) आंखों को इस तरह तैयार करना कि वह रूप और रंग पहचान सके और उसमें फर्क कर सके।

(2) आकृतियों को याद करने की आदत बढ़ाना।

(3) प्रकृति और कला की सुन्दरता को जानने और सराहने की योग्यता पैदा करना।

(4) सुन्दर नक्शे (डिजाइन) बनाने और सजावट की रुचि पैदा करना और उसकी योग्यता बढ़ाना।

(5) जो चीजें तैयार करनी हैं, उनके लिए काम चलाऊ चित्र खींचने की योग्यता पैदा करना।

उपरोक्त ध्येयों को पूरा करने हेतु नीचे लिखे उपायों से काम लिया जा सकता है :

(i) बच्चे जिन चीजों को देखें या पढ़ें उनके चित्र बनाएं।

(ii) बच्चे-प्रकृति-परिचय, सामान्य विज्ञान या दस्तकारी के काम के सिलसिले में जिन पौधों, जानवरों या मनुष्यों को देखें, उन्हें देखकर या याद से उनके चित्र खींचें।

(iii) सुन्दर-सुन्दर नक्शे (डिजाइन) बनाना।

(iv) स्केल-ड्राइंग, ग्राफ और ग्राफ ड्राइंग (आलेख चित्र)।

पहले चार सालों में चित्रकला की तालीम प्रकृति-परिचय और दस्तकारी की तालीम के साथ-ही-साथ होनी चाहिए। अन्त के तीन सालों में खासकर सुन्दर नक्शे बनाने, सजावट करने और जो चीजें तैयार करनी हैं, उनके चित्र बनाने पर जोर देना चाहिए।

(7) संगीत

संगीत सिखाने का ध्येय यह है कि विद्यार्थी कुछ अच्छे राग और भाव के गीत सीख जाएं और उनमें सुन्दर संगीत के प्रति अनुराग पैदा हो। बच्चों में जो लय और ताल की सहज भावना होती है, उसे बढ़ाने के लिए संगीत के साथ उन्हें खुद दोनों हाथों से ताल देना सिखाया जाए। कदम मिलाकर ताल के साथ चलने से भी इसमें मदद मिल सकती है।

गानों को चुनते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बच्चों को जो गाने सिखाए जाएं वे अच्छे-से-अच्छे हों, उनका भाव ऊंचा और उत्साह देने वाला हो और उनका स्वर मधुर हो। मिलकर गाने पर खास जोर देना चाहिए।

(8) हिन्दुस्तानी

हिन्दुस्तानी को स्कूल के पाठ्यक्रम में अनिवार्य रखने का ध्येय यह है कि बुनियादी स्कूलों में पढ़े हुए बच्चे देश की आम जबान को काम के लायक जानते हों और बड़े होकर हिन्दुस्तान के दूसरे प्रान्तों के लोगों के साथ आसानी से काम कर सकें। इस भाषा को सिखाने में अध्यापक को बच्चों के दिलों में यह बात बैठा देनी चाहिए कि यह महान् भाषा हिन्दू और मुसलमानों के मेल-जोल का सबसे बड़ा और अच्छा फल है। यह उन दोनों के अच्छे-से-अच्छे विचारों और भावों का खजाना है। उन्हें इस राष्ट्रभाषा की विशालता और जीवन-शक्ति पर गौरव अनुभव करना चाहिए और दिल से उसकी सेवा करने की चाह होनी चाहिए।

जहां हिन्दुस्तानी ही बोली जाती है, वहां की वह मातृभाषा होगी। पर वहां के शिक्षकों और बच्चों, दोनों के लिए नागरी और फारसी दोनों लिपियों का सीखना लाजिमी होगा ताकि वे हिन्दी और उर्दू में लिखी किताबों को पढ़ सकें। दूसरे प्रान्तों में जहां की मातृभाषा प्रान्तीय भाषा होगी, हिन्दुस्तानी पांचवें और छठे दर्जे में लाजिमी रखी जाएगी और बच्चों को किसी एक लिपि को चुनकर सीखने की स्वाधीनता होगी। पर शिक्षकों को तो दोनों तरह के बच्चों से काम पड़ेगा, इसलिए अच्छा है कि वे दोनों लिपियां सीख लें।

कम-से-कम हर स्कूल में दोनों लिपियों के सिखाने का प्रबन्ध होना चाहिए।

पाठ्यक्रम की साधारण रूपरेखा लड़कों और लड़कियों के लिए एक ही होगी। चौथे और पांचवें दर्जे में लड़कियों के लिए साधारण विज्ञान के पाठ्यक्रम में घरेलू काम-काज की कुछ जानकारी भी शामिल करनी चाहिए। छठे और सातवें दर्जे की लड़कियां चाहें तो बुनियादी दस्तकारी की जगह गृह-विज्ञान की अमली और शास्त्रीय ज्ञान ले सकेंगी। ◆

शिवदत्त द्वारा संकलित एवं संपादित पुस्तक **'समग्र नई तालीम : विचार, दर्शन, योजना एवं पाठ्यक्रम'** से साभार